GRIZZLY
COLLEGE OF EDUCATION
Recognised by ERC, NCTE. Affiliated to VBU Hazaribagh

प्रतिकृति

Bulletin ISSUE Jan-Apr - 2017

From the Directors' Desk

ग्रिजली कॉलेज ऑफ एजुकेशन प्रांतीय स्तर पर एक नामचीन संस्था के रूप में लगभग स्थापित हो चुका है और शिक्षा जगत में इस महाविद्यालय का नाम सम्मानपूर्वक लिया जाता है। इसका मूल कारण है कि हम सब, पूरा परिवार का हर एक सदस्य चाहे वो छात्र–छात्रा हों, शिक्षकेत्तर टीम के सदस्य हों, शिक्षक हों, या फिर प्रबंधन के सदस्य हों, अपने टीम लीडर, अपनी प्राचार्या के सशक्त लीडरशीप में एक साथ सफलता की ऊँचाई को छूने को प्रतिबद्ध है। हम सब बेचैन हैं – शिक्षा के क्षेत्र में एक **Bench Mark** स्थापित करने को और ये विश्वास है – हम कर भी लेंगें। तो फिर **"Miles to go before we sleep"** के मूलमंत्र के साथ हम सब बढ़ चलें। आप सब स्वस्थ रहें – खुश रहें – और अपनी मंजिल के प्रति प्रतिबद्ध रहें।

हमारी शुभकामनाएँ!

मनीष कपसिमे *अविनाश सेठ* *अरूण मिश्रा*

Dr. Sanjeeta Kumari
Principal

From Principal's Desk

ग्रिजली कॉलेज ऑफ एजुकेशन द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'प्रतिकृति' जनवरी–अप्रैल 2017 का सस्करण एक नये अन्दाज और कलेवर में आपके सन्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। इस सत्र के प्रारम्भिक चार महीनों मे महाविद्यालय में कई तथ्यपरक, रचनात्मक और ज्ञानवर्द्धक कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस कडी में 20 जनवरी को योग दिवस के साथ ही साथ शैक्षणिक सर्वे का आयोजन, 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस समारोह, 01 फरवरी को ज्ञान देवी माँ सरस्वती की पूजा अभ्यर्थना, 02 फरवरी को रोजगार मेला से सम्बन्धित प्रेसवार्ता, 5 फरवरी को रोजगार मेला का आयोजन, 7 फरवरी को महाविद्यालय स्थापना दिवस, सत्र 2015–17 के द्वितीय सेमेस्टर का उत्कृष्ट परीक्षाफल, सत्र 2016–18 के प्रथम सेमेस्टर की विश्वविद्यालीय परीक्षा और 27.03.2017 से प्रशिक्षुओं के ज्ञान भण्डार मे अभिवृद्धि के लिए **English Spoken Class** आरम्भ किए गए हैं। इससे प्रशिक्षु काफी लाभान्वित हो रहे हैं।

इसके अतिरिक्त कई विशिष्ट विश्वविद्यालयी स्नातकोत्तर विधि और बी0एड0 की परीक्षाएँ इसी महाविद्यालय में शांतिपूर्वक और व्यवस्थित ढग से सचालित किए गए। परीक्षा सचालित करने आए केन्द्राधीक्षकों और विश्वविद्यालय के पदाधिकारियों ने इसे श्रेष्ठतम व्यवस्था का पर्याय माना है। यह समग्र रूप से महाविद्यालय की गुणवत्ता और शैक्षिक विकास का एक आदर्श रूपरेखा प्रस्तुत करता है। ये सब महाविद्यालय के सक्रिय शिक्षकों, शिक्षकेत्तर कर्मचारियों और प्रशिक्षुओं की कडी मेहनत का फल है। इसके लिए मैं अपनी ओर से इन्हें हार्दिक धन्यवाद और उनके मगलमय भविष्य की शुभकामना प्रेषित करती हूँ।

Dr. Sanjeeta Kumari
Dr. Sanjeeta Kumari
Chief Editor

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Activities of the Month Jan, Feb, March & April' 2017

Yoga Day

Educational Survey

Republic Day

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Saraswati Puja Celebration

Press Conference for Campus Selection Fair 2017

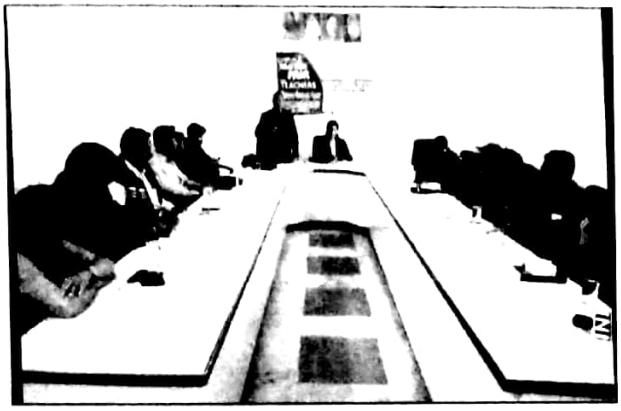

Campus Selection Fair 2017

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

College Establishment Day

Open Discussion Class on Forgetting Programme

Shiksha Pariyojana

चिंतन एवं कल्पना में अंतर

चिंतन की प्रक्रिया लक्ष्य केन्द्रित होती है क्योंकि जब भी व्यक्ति के सामने कोई समस्या आती है तब वह उसके समाधान के लिए चिंतन करना प्रारम्भ कर देता है और तब तक चिंतन करता है जब तक की उस समस्या का समाधान न हो जाए। वहीं कल्पना में हमारे सामने कोई निश्चित या अनिश्चित समस्या नहीं होती है फलतः व्यक्ति का प्रयास किसी खास समस्या या लक्ष्य की ओर नहीं होता है। क्योंकि प्रायः कल्पना करते समय व्यक्ति भिन्न–भिन्न वस्तुओं, व्यक्तियों या घटनाओं से सम्बन्धित विचार यादृच्छिक तरीके से (Randomly) मन में लाता है।

चिंतन करते समय व्यक्ति क्रमबद्ध रूप से विषय या घटना के पक्ष में या विपक्ष में तर्क या वितर्क करता है जबकि कल्पना में कभी दूसरी वस्तु से संबंधित प्रतिभाएँ या पूर्व अनुभूतियाँ मन में आती हैं। तो कभी दूसरी वस्तु से संबंधित प्रतिमाएँ या पूर्व अनुभूतियाँ, अर्थात् इसमें कोई क्रमबद्धता तथा तर्क सम्मिलित नहीं होता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

चिंतन का संबंध वास्तविकता से होता है जैसे यदि छात्र गणित के सवालों का हल कर रहा है तो इसके द्वारा किया गया चिंतन सदैव सवाल को हल करने पर ही केन्द्रित रहता है वहीं कल्पना में वास्तविक से कम और अवास्तविक से अधिक संबंध होता है जैसे यदि एक बालक आकाश में काले–काले बादल को उड़ते देखकर उसके साथ वह भी उड़ने की बात यदि सोचता है तो यह कल्पना ही कहलायेगी।

चिंतन में सदैव प्रयत्न तथा त्रुटि की प्रक्रिया होती है और ऐसा इसलिए होता है क्योंकि चिंतन के सहारे व्यक्ति समस्या का समाधान करता है जबकि कल्पना में प्रयत्न तथा त्रुटि की प्रक्रिया नहीं होती क्योंकि इसका संबंध किसी समस्या के समाधान से नहीं होता है।

चिंतन में कोई न कोई समस्या अवश्य ही होती है जबकि कल्पना में ऐसी बात नहीं है क्योंकि इसका संबंध किसी निश्चित व्यक्ति, वस्तु या घटना से नहीं होता है। हम चुपचाप बैठे रहते हैं और हमारे सामने कोई समस्या नहीं होती है तब भी हम कुछ न कुछ कल्पना करते ही रहते हैं।

प्रो0 चन्द्रशेखर नाथ झा
व्याख्याता
ग्रिजली कॉलेज ऑफ एजुकेशन

धरती माता

धरती हमारी माता है,
माता को प्रणाम करो।
बनी रहे इसकी सुंदरता,
ऐसा भी कुछ काम करो।

आओ हम सब मिलजुल कर,
इस धरती को ही स्वर्ग बना दें।
देकर सुंदर रूप धरा को,
कुरूपता को दूर भगा दें।

नैतिक जिम्मेदारी समझ कर,
नैतिकता से काम करें।
गंदगी फैला भूमि पर,
माँ को न बदनाम करें।

माँ तो है हम सब की रक्षक,
हम इसके क्यों बन रहे भक्षक।
जन्म भूमि है पावन भूमि,
बन जाएँ इसके संरक्षक।

कुदरत ने जो दिया धरा को,
उसका सब सम्मान करो।
न छेड़ो इन उपहारों को,
न कोई बुराई का काम करो।

धरती हमारी माता है,
माता को प्रणाम करो।
बनी रहे इसकी सुंदरता,
ऐसा भी कुछ काम करो।

राकेश कुमार शर्मा
637, 2015-17

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

पेड़ों की छाया

पेड़ की छाया में ही तो, पंछियों का रैन बसेरा है।
इनके होने से हम हैं और कहते जीवन मेरा है।

गौर से देखो जरा इन्हें, ये भी तो कुछ कहते हैं।
फूल, फल, हवा, सुगंध ये सब देते रहते हैं।।

मीठे–मीठे फल इनके, बच्चों को कितना भाते हैं।
इनका ही तो रस लेकर भँवरें मस्त मगन हो जाते है।।

पत्तियाँ कभी ताजी हरी तो, कभी सूखकर सुनहरी हो जाती हैं।
इन्हें देखकर कोयल भी तो, देखो नगमें कैसे गाती हैं।।

देख इन्हें हर एक का दिल, ऐसे खुश हो जाता है।
जैसे शीतलहर का झोंका खुशियों के रंग लाता है।।

इनको अगर जो काट गिराया, कैसे मिलेगी तुमको छाया।
दर्द इन्हें भी होता होगा, चोट इन्हें भी लगती होगी।।

इसको जो काट गिराओगे, तुम भी तो न बच पाओगे।
इनसे हम हैं, हम से ये हैं, इनसे ही है साँसें अपनी।
इसके बिना न जीवन अपना, इनकी रक्षा काम है अपना।।

हर एक जो पेड़ लगाएगा, वो नेक काम कर जाएगा।
वो समझेगा दर्द को इनके, इन्सान वही कहलायेगा।।

ज्योति रानी
655, 2015-17

बस्ता

मम्मी कैसे इसे उठायें,
बस्ता मेरा भारी।
रोज लादना पड़ता इसको,
ये मेरी लाचारी।

बीस किताबें और कॉपियाँ,
कैसे इसे उठायें ?
मन करता है छुट्टी लेकर,
बिस्तर पर सो जायें।

थक जाता इसे उठाकर,
खेल नहीं फिर पाता।
पढ़ना लिखना भी मुश्किल है,
इतना मुझे सताता।

जैसे–जैसे बच्चा बढ़ता,
बस्ता बढ़ता जाता।
मजबूरी में छोटा बच्चा,
फिर भी इसे उठाता।

बस्ता और पढ़ाई दोनों में,
ये कैसा है नाता ?
बस्ते के कारण ही बच्चा,
पढ़ने से घबराता

आदित्य रंजन
664, 2015-17

"वर्षा रानी"

तुम धन्य हो वर्षा रानी, मृत्प्रायों को देती पानी
जग में तुम खुशहाली लाती खेतों में हरियाली लाती ...
संग अनेक सहेली लाती, तपते जग में शीतलता लाती ...
नये–नये तुम फूल खिलाती जंगल में भी मंगल लाती ...
तुम जग की रक्षा करती, तुम बिन कौन हमें दे पानी ...
अन्नदात्री है तू ही रानी तुम धन्य हो वर्षा रानी ...
जब तुम कृपा करती हो रानी, जग में भर जाता है पानी ...
तुम पर ही अरमान हमारा, तुम पर ही है प्राण हमारा ...
बस इसलिए तो हम तेरी करते हैं अगवानी,
चाहे राजा हो या रानी ...
सब भर जाएँ बिना पानी, पशु हो
पक्षी या मानव सबका हो जीवन है पानी
तुम जब जाती हो रानी, तो रो पड़ते हैं सब प्राणी ...
यह सत्य है करूण कहस पर, तुम यहीं रहो मनमानी ...
तब हम भी सुखी रहेंगे, जब जीवन प्राप्त करेंगे ...
तुम धन हो वर्षा रानी, मृत्प्रायों को देती पानी ...

संध्या कुमारी
719, 2016-18

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

बंद करो बाल श्रम

कहाँ गये वो सुन्दर फूल
कहाँ गई वो मुस्कान
कहाँ उड गई सारी धूल
क्यों चुप हो गए गाने

झूले अब थम से गए
पिता खड़ा खामोश है
मैदान भी जम से गए
हर घर आँगन मदहोश है।

बहुत ढूढ़ा तो पता चला
वो सब बच्चे वहाँ हैं
जहाँ पर खुशियाँ बेरंग हैं
बचपन जीना मना है

वहाँ बच्चों से बंगले बनवाये जाते हैं
चुड़ियाँ, कंगन, बीड़ी भी बनवाई जाती है
यही सही वक्त है कुछ करने का,
कुछ बदलने का,
क्योंकि कोमल बच्चे जूझ रहे हैं,
कष्ट भरे अँगारे में, और रोते हैं अंधेरे में

बंद करो ये बाल श्रम
बच्चों का यह क्रूर समझौता
नहीं रहेगा कोई भी बच्चा
अब इसकी आड़ में रोता
बंद करो बाल श्रम

उमापति मिश्रा
757, 2016-18

माँ का एहसास

मीठा एहसास हुआ मुझको
जब गोद में आयी तुम मेरे
पूर्ण हो गया जीवन मेरा
जब गोद में आयी तुम मेरे .....

सारी पीड़ा दूर हो गयी
रूह की ममता जाग गयी
नैनों में एक आशा छायी
जब गोद में आयी तुम मेरे ...

नया एक अब नाम मिला
नया रूप जीवन में खिला
पतझड़ में फिर से बहार आयी
जब गोद में आयी तुम मेरे .....

देखा जब पहली बार तुझे
चुमाँ जब पहली बार तुझे
दिल अति आनन्दित हो गया
जब गोद में आयी तुम मेरे ...

डुबते को जैसे मिला
अनाथ को जैसे सहारा मिला
वो एहसास हुआ मुझको
जब गोद में आयी तुम मेरे .....

आशीष यही अब है मेरी
काबिलियत हो तुममे इतनी
इतराऊँ भाग्य पर मैं अपनी
कि गोद में खेली तुम मेरे ...

सोनम कुमारी
766, 2016-18

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Best House of The Month **Jan' 17 : Radhakrishnan House**
Best House of The Month **Apr' 17 : Rousseau House**

ACHIEVEMENTS

100% Attendance in Jan' 2017

Name	Roll No.	Name	Roll No
Suraj Kumar	705	Dolly Rani	707
Rinky Kumari	709	Sandhya Kumari	713
Mamta Kumari	715	Suraj Kumar	722
Saraswati Kumari	728	Tuntun Kumari	729
Monika Kumari	735	Pankaj Kumar Verma	736
Rahul Kumar Yadav	746	Umapati Mishra	757
Soni Gupta	759	Sonam Kumari	766
Deepika Sonkar	773	Nidhi Kumari	782
Pankaj Kumar Yadav	785	Priyanka Kumari	787

100% Attendance in Apr' 2017

Name	Roll No.	Name	Roll No
Suraj Kumar	705	Dolly Rani	707
Sandhya Kumari	713	Sangeeta Kumari	719
Umapati Mishra	757	Soni Gupta	759
Manish Pandey	763		

Editorial Board

Book - Post

Chief Editor :
Dr. Sanjeeta Kumari

Editors
Prof. C. N. Jha
Prof. P. Kumar

Student Editors
Nikita Ajmani,
Abhilasha Kumari, Niru Kumari
& Pankaj Kumar Yadav

To

PRINTED AT: BHAGWATI PRESS, JHUMRITELAIYA, PH.# 06534-222453

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner